International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 6; June 2016; Page No. 13-15

''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद'' आधारित मूल्य शिक्षा के विषय वस्तु एवं पाठ्यक्रमों का स्वरूप

[1] हिना चावड़ा, [2] डॉ0 सुरेन्द्र पाठक

[1] अध्यापिका–मूल्य शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शदात्री विभाग–मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर, छ.ग. भारत।
[2] विभागाध्यक्ष–चेतना विकास मूल्य शिक्षा, आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर रा.ज., भारत।

सारांश

आदिकाल से ही मानव परंपरा में शिक्षा की बात है यह जंगल युग से ही है। शिक्षा के बारे में मानव चर्चा करते ही आया है। इस क्रम में हमारे देश में वैदिक शिक्षा की बात आयी। दूसरे दश में बाइबिल को शिक्षा में लाने की बात हुई। तीसरे देश में कुरान को शिक्षा में लाने की बात हुई। ऐसे ही विभिन्न प्रकार की शिक्षा परम्पराऐं धरती पर स्थापित हुई। यह क्रम चलते–चलते आज के समय में विज्ञान शिक्षा का सभी देशों में लोकव्यापीकरण हो चुका है। विज्ञान शिक्षा से अपेक्षा थी कि इससे सबकों तृप्ति मिलेगी, लेकिन इससे तृप्ति मिला नहीं। अभी तक जो कुछ भी शिक्षा में आया, उसके ''विकल्प'' के रूप में ''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद का चेतना विकास मूल्य शिक्षा'' का प्रस्ताव है। मानव ने जीव चेतना में जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के क्रम में शरीर सुविधा से संबंधित सभी वस्तुऐं प्राप्त कर लीं। सारी भौतिक सुविधा की उपलब्धि के बाद भी मानव को शिक्षा से संतुष्टि नहीं मिलीं। इसका मूल कारण है यह है मानव ज्ञान अवस्था की इकाई है और उसको जीव चेतना की शिक्षा से संतुष्टि मिल नहीं सकती। इसलिए ''विकसित चेतना'' के अध्ययन को शिक्षा में लाने के लिए प्रस्ताव है। विकसित चेतना अर्थात मानव चेतना, देवचेतना, दिव्य चेतना।

शब्द कुंजी: मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद, मूल्य शिक्षा, मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु, चेतना, शिक्षा।

1 प्रस्तावना

प्रत्येक शिशु जन्म से ही न्यायापेक्षी, सही कार्य व्यवहार करने वाला एवं सत्य वक्ता होता है, परन्तु न्याय, सही कार्य–व्यवहार एवं सत्य से शिशु अनभिज्ञ रहता है। इन्हें समझने के लिए वह परम्परा पर, मुख्यतः शिक्षा परम्परा पर आश्रित रहता है। इस हेतु आज्ञापालन, अनुसरण, अनुकरण एवं जिज्ञासा सम्पन्न रहता है। अस्तु विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार मानवीय चेतना विकसित करने हेतु एवं शिक्षकों की सार्थकता प्रमाणित होने के उद्देष्य से शिक्षा में मानवीय मूल्य शिक्षा आधारित पाठ्यक्रमों की आवश्यकता महसुस होती है। बच्चें एक विद्यार्थी के रूप में शिक्षा में अपना 20–25 वर्ष समय लगाते है तब जाकर उनकी शिक्षा पूरी होती है। यहॉ महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि 20–25 वर्ष की मेहनत के बाद फल परिणाम में क्या पाते है? केवल डिग्री या उत्सव पूर्वक जीने की सही समझ। स्वयं में विश्वास या भविष्य कि चिंता? 20–25 वर्ष की शिक्षा के बाद भी अविश्वास, तनाव, भय, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, अंधविश्वास व अन्य अपराधिक गतिविधियॉ इत्यादि समस्याऐं कहॉ से आ रही है? वर्तमान शिक्षा नौकरी, उद्योग एवं व्यापार के द्वारा जीविकोपार्जन के लिए तैयार करती है किन्तु स्वयं में, परिवार में, परस्परता में विश्वास, सुख, शांति, समृद्धि पूर्वक जीना केवल जीविकोपार्जन से संभव नहीं है। हम सभी जानते है हमारी की दो तरह की आवश्यकताएं हैं शारिरिक एवं मानसिक। मानसिक आवश्यकताऐं स्वयं में विश्वास, आपसी तालमेल एवं जीने की सही समझ से ही पूरी होती है न कि भौतिक संसाधनों से।

2 आवष्यकता एवं महत्व

वर्तमान शिक्षा नौकरी, उद्योग एवं व्यापार के द्वारा जीविकोपार्जन मात्र के लिए है न कि सुख, शांति, समाधान पूर्वक जीने के लिए। वर्तमान शिक्षा केवल रोजागारोन्मुखी है अर्थात नौकरी या व्यापार व्यवसाय से हम केवल भौतिक सुविधा पूर्ति के लिए धन या भौतिक वस्तु ही प्राप्त कर सकते है जो केवल मानव के शरीर की आवश्यकता की पूर्ति करता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो मानव की शारीरिक एवं मानसिक दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो। मानव एक प्राकृतिक ईकाई है। प्रकृति में स्वयं स्फूर्त विधि से बनी इकाईयॉ अपने आप में सम्पूर्ण और पूर्ण है। आवश्यकता है मानव को जैसा है वैसा समझने की। यह वर्तमान मानवीय परंपरा की सर्वग्राह प्रमुख आवश्यकता है। मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के माध्यम से मानव सहित प्रकृति की समस्त इकाईयां एवं उनके परस्पर संबंधों का तर्कपूर्ण विधि से अध्ययन संपन्न हो पाया है। इसी आधार पर मानव एवं प्रकृति तथा उनके अंर्तसंबंधों को शिक्षा विधि से समझना एवं व्यवहार में जीकर प्रमाणित करना संभव हो पाया है।

संपूर्ण प्रकृति में चार अवस्थायें हैं जो क्रमशः है

1) पदार्थावस्था (मिट्टी, पत्थर, मणि, धातु),
2) प्राणावस्था (वनस्पति, कीट, पतंग)
3) जीवावस्था (पशु–पक्षी),
4) ज्ञानावस्था (मानव)

उपरोक्त चार अवस्थाओं में मानव के अलावा शेष सभी अवस्थाओं की इकाईयां व्यवस्था में है व प्रकृति में उनकी निश्चित भागीदारी है। यही उन इकाईयों के होने का अर्थ है, मूल्य है। अपने होने के अर्थ में जीना ही निश्चित आचरण है। मानव भ्रमवश स्वयं और प्रकृति के मूल्य को समझ नहीं पाने के कारण प्रकृति का शोषण किया जिससे धरती में ग्लोबल वार्मिंग और परिवार में टूटन हुआ। इससे सिद्ध होता है कि मानव का आचरण निश्चित नहीं है। मानव के अलावा प्रकृति में सभी इकाईयॉ प्राकृतिक विधि से नियंत्रित है। मानव समझ के आधार पर नियंत्रित होता है, निश्चित आचरण पूर्वक जी पाता है अर्थात् अपने होने के अर्थ को पहचानकर सार्वभौम मानवीय मूल्यों में जीता है।

मध्यस्थ दर्षन सहअस्तित्ववाद के संदर्भ में मूल्य शिक्षा विषय वस्तु एवं पाठ्यक्रमों का स्वरूप मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित आधारभूत शर्तो को पूरा करता है

1) पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हैं। सार्वभौम मानवीय मूल्यों को व्याख्यान्वित करता है।

2) पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, पूजन पद्धति से सर्वथा मुक्त है। किसी भी प्रकार के सम्प्रदायवाद एवं रहस्यवाद से मुक्त है ।
3) पाठ्यक्रम तर्क आधारित है। प्रतिभागी तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोगों एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते है।
4) इसके अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं।
5) इसे कार्य–व्यवहार में लाकर इसका परीक्षण किया जा सकता है।

मूल्य षिक्षा से अभिप्राय है कि अस्तित्व में हर इकाई की दूसरी इकाईयों के लिए उपयोगिता सुनिश्चित है ठीक इसी तरह से मानव का भी शेष मानवों के लिए उपयोगिताएं एवं मूल्य सुनिश्चित है जिसे उपरोक्त परिभाषाओं में स्पष्ट किया गया है। इन उपयोगिताओं अथवा मूल्यों के निर्वाह करने की योग्यता बनाने हेतु शिक्षा को मूल्य शिक्षा कहा गया है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता को तकरीबन सभी बुद्धिजीवियों ने महसूस की है। 1929 में हर्टांग समीति ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की थी कि भारतीय विद्यालयों में धार्मिक निर्देषों की शिक्षा दी जानी चाहिए। 1937 में महात्मा गॉधी ने वर्धा में प्रथम भारतीय शिक्षा सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता महसुस की।

विभिन्न आयोगों के अनुसार (According to Various Commission)

1) 1948 में डॉ. राधाकृष्ण की अध्यक्षता में नियुक्त किये जाने वाले 'विष्वविद्यालय षिक्षा आयोग' ने धार्मिक और नैतिक मूल्य षिक्षा की विषय वस्तु के बारे में सुझाव दिये।
2) वर्ष 1970 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिसर ने एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मूल्यों की आवष्यकता अनुभव की गई। इस गोष्ठी में मूल्यों के विकास पर बल दिया गया।
3) राष्ट्रीय शैक्षिणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिसर में एक छोटी सी पुस्तिका 'Social Moral and Spritual Values' प्रकाषित की। इसमें शासकिय स्तर पर 'Values' शब्द का प्रयोग किया गया। इसमें 83 मूल्यों की एक सूचि भी दी गई है।

युनेस्को द्वारा अपेक्षित षिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ 'Learn to Live Together' अर्थात साथ साथ जीना सीखना पर जोर दिया है।

आधुनिक षिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समाधान, समृद्धि पूर्वक जी सके। इसके लिए मानवीय मूल्यों की षिक्षा की आवष्सकता महसूस की जाती रही है।

3 मूल्य षिक्षा की विषय वस्तु विविध पाठ्यक्रमों में

1) विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन।
2) मनोविज्ञान के संस्कार पक्ष का अध्ययन।
3) दर्षनषास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन।
4) अर्थषास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक एश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
5) राज्यनीति शास्त्र के मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन।
6) समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का अध्ययन।
7) भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का अध्ययन।
8) साहित्य के तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है क्योंकि इसके बिना इसकी पूर्णता सिद्ध नहीं होती।
9) इतिहास में न मौलिक घटनाओं व प्रेरणाओं को वरीयता के रूप में अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी जो मानवीयतापूर्ण जीवन के लिए प्रेरणादायी होगी।

4 मूल्य षिक्षा से मानव पॉच सदगुणों से सम्पन्न होता है

1) स्वयं में विश्वास
2) श्रेष्ठता का सम्मान
3) प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन
4) व्यवसाय में स्वावलंबी
5) व्यवहार में सामाजिक

5 मूल्य षिक्षा की सार्वभौमिकता

यदि भारतीय मूल्य होंगे तो पाकिस्तानी व अमेरिकन, जापानी इत्यादि मूल्य भी होंगे जो परस्पर विरोध को व्यक्त करेंगे। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्य किसी स्थान, व्यक्ति से संबंधित नहीं होते मूल्य सार्वभौम होता है, सर्वकालिक होते हैं।

1) सार्वभौम मानवीय आचरण
2) सार्वभौम मानवीय शिक्षा
3) सार्वभौम मानवीय व्यवस्था
4) सार्वभौम मानवीय संविधान

6 षिक्षा

शिष्टता पूर्ण दृष्टि की उदय प्रक्रिया। अर्थात सही समझ पैदाकर पाने वाला प्रशिक्षण शिक्षण एवं अध्ययन की संयुक्त प्रक्रिया जिसके माध्यम से शिष्ट मूल्यों का उदय हो सके वही शिक्षा है।

7 मूल्य षिक्षा

चेतना का विकास करे ऐसी शिक्षा अर्थात मूल्य षिक्षा से अभिप्राय है कि अस्तित्व में हर इकाई की दूसरी इकाईयों के लिए उपयोगिता सुनिश्चित है ठीक इसी तरह से मानव का भी शेष मानवों के लिए उपयोगिताएं एवं मूल्य सुनिश्चित है जिसे उपरोक्त परिभाषाओं में स्पष्ट किया गया है। मानव में इन उपयोगिताओं अथवा मूल्यों के निर्वाह करने की योग्यता बनाने हेतु शिक्षा को मूल्य शिक्षा कहा गया है।

8 चेतना विकास

जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही चेतना विकास है।

9 विकास

न्यून मूल्य से अधिक मूल्य की ओर परिणाम ही विकास है। गुणात्मक परिणाम ही विकास है। चारों अवस्था में संतुलनकारी सामंजस्य एवं समन्वयपूर्वक गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है।

10 मध्यस्थ दर्षन

एक ऐसे समाधान का प्रस्ताव है जो मानव जीवन के सभी आयामों को एक सामंजस्यपूर्ण समग्रता में उत्तरित करता है। सुखद व्यवस्थित जीवन शैली के लिए यह एक सर्वस्वीकृत एवं सहज स्वीकृत विकल्प है। सात दिन के आवासीय शिविरों के माध्यम से 'मध्यस्थ दर्शन' का एक परिचय प्रस्तुत करते है। मानव, परिवार, समाज, प्रकृति इन सब में अस्तित्व सहज व्यवस्था एवं इन सबके अंर्तसंबंधों की तर्कपूर्ण समझ निरंतर सुख एवं समृद्धि पूर्वक जीने के लिए अनिवार्य है। मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति और मध्यस्थ क्रिया का वर्णन ही मध्यस्थ दर्शन है।

''मध्यस्थ दर्षन सहअस्तित्ववाद'' के प्रकाष में चेतना विकास मूल्य षिक्षा पृथक पाठ्यक्रम के रूप में आज निम्न स्थानों पर पढ़ाया जा रहा है:

1) छत्तीसगढ़ में मूल्य षिक्षा अध्ययन केन्द्र: मानवीय शिक्षा शोध

संस्थान अभ्युदय संस्थान अछोटी दुर्ग एवं अभिभावक विद्यालय वी.आई.पी. माना रोड़ रायपुर, सार्वभौम मानवीय मूल्य शिक्षा केन्द्र– एन.आई.टी. रायपुर, एस.सी.ई.आर.टी. शंकर नगर रायपुर एवं छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है।

2) आई.आई.आई.टी. हैदराबाद।
3) मानवीय शिक्षा संस्कार कानपुर, एच.बी.टी. आई. कानपुर, आई. आई.टी. कानपुर।
4) आई.आई.टी. दिल्ली।
5) यू.पी. टेक्नीकल यूनिवर्सिटी के 630 महाविद्यालयों में पंजाब टेक्नीकल यूनिवर्सिटी।
6) चेतना विकास मूल्य शिक्षा–आई.ए.एस.ई. डीमड यूनिवर्सिटी सरदारशहर राजस्थान।
7) महाराष्ट्र में सोमईया विद्याविहार मुंबई एवं पुणे।
8) दिव्य पथ संस्थान अमरकण्टक म.प्र., मानव चेतना विकास केन्द्र इंदौर मध्यप्रदश।
9) पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जीवन विद्या प्रतिष्ठान बिजनौर।
10) बी.एच.यु. बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय।
11) अन्य स्थानों पर –बैन्गलोर, मसूरी, कनाडा, नेपाल, गुजरात, भूटान इत्यादि.....।

11 संदर्भ ग्रंथ

1. ए. नागराज, मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद, जीवन विद्या अध्ययन बिंदु से
2. ए. नागराज, 1998, जीवन विद्या एक परिचय, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
3. ए. नागराज, 1999, व्यवहारवादी समाजशास्त्र जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
4. ए. नागराज, 1998, समाधनात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
5. ए. नागराज, 1998, मानव संचेतनावादि मनोविज्ञान, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
6. ए. नागराज, 2002, आवर्तनशील अर्थशास्त्र, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
7. ए. नागराज, 2003, मानव व्यवहार दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
8. ए. नागराज, 2004, मानव कर्म दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।
9. ए. नागराज, 2007, मानविय संविधान सूत्र व्याख्या, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकण्टक म.प्र.।